" बादल–2"

उस
उचांई पर जहाँ से
जमीन दिखाई देने लगती है
फील्ड बुक सी,
सड़कें, सर्पिल लकीरों सी
बस्तियाँ, कुछ ऐसी कि
किसी बच्चे ने कैनवास पर डाले हो रंग के छीटें

इस
उचांई पर जहाँ बादल बनते है
धुंध सी छाई होती है चारों ओर
और चमकते हुये उजले बादल
कुछ इस तरह से लगते है कि
किसी ने धुन कर रूई को उडा दिया हो हवा में

इस
उचांई पर आकर ही पता चलता है कि
हम छांव को देख सकते हैं
बादल की परछांई के रूप में
जिसे हम आसमान कहते हैं, जमीन पर
कितना अलग है
उस नीलाभ व्योम जिसमे बादल
बूटीयों से जडे प्रतीत होते है
यहाँ छोड देते हैं नीरभ्र का साथ
और अपनी ही पहचान से जमें रहते है
धरती और आसमान के बीच

————————————————————————————